शोध मंथन Vol. XIV No.III July-Sep. 2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

श्री लंका के आदिवासियों का विकास

प्राप्तिः 28.08.2023
स्वीकृतः 15.09.2023

डा० वजिरा गुणासेन
वरिष्ठ व्याख्याता
श्री जयवर्धनपुर विश्वविद्यालय, श्री लंका
ईमेलः *wajiragunasena@sjp.ac.lk*

51

सारांश

किसी देश के इतिहास और संस्कृति का अध्ययन करते समय उसी देश की प्राचीन संस्कृति के परिचायक आदिवासी होते हैं, जो उस देश के मूल एवं प्राचीनतम निवासी हैं, वे प्रारम्भ से ही दूरस्थ जंगलों एवं निर्जन स्थानों पर निवास करते हैं और इसकी अपनी एक विशिष्ट भाषा, संस्कृति, सामाजिक एवं आर्थिक व्यवस्था और परम्पराएँ भी होती हैं।

श्री लंका के आदिवासियों को 'वॅद्दा' नाम से अभिहित किया जाता है। 'वॅद्दा' एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है– 'शिकारी' या 'शिकारी करनेवाला'। प्राचीन काल में आदिवासी देश के हर क्षेत्रों में रहते थे, इसलिए विशेष रूप से देश के उफव, सबरगमुव, पूर्वी, उत्तर तथा मध्यम आदि क्षेत्रों में उनका निवास स्थान थे। वे पॉल बॅद्द, बकिनिगस्दूव, पादावल, उफव बिन्तॅन्न, रतुगल, निलगल, कुरुदुवत्त के अलावा अनुराधपुर जिले में कुडा तम्मॅन्नाव, तन्तिरिमले, हेरत्गम, कटुकॅलियाव, बक्मीगॉड, अदम्पने, महमीगस्वॅव तथा कटमन्कुलम आदि प्रदेशों में भी बसे थे। पर आजकल उनके निवास स्थान दबॉन, रतुगल, निलगल, सॉरबॉर, दिबुँलागल तथा पॉलवॅद्द आदि क्षेत्रों तक सीमित हुए हैं। इनके अलावा समुद्र तट के आसपास कुछ आदिवासी निवास करते हैं, जिन्हें 'मुहुदु वॅद्दा; समुद्र वॅद्दाद्ध कहते हैं।

श्री लंका का इतिहास ग्रंथ 'महावंश' के अनुसार सिंहली जाति के प्रथम राजकुमार 'विजय' ई.पू छठी शताब्दी में श्री लंका आये और उन्होंने यक्ख (यक्ष) गोत्र की स्त्री 'कुवेणी' के साथ विवाह किया। बाद में उन्हें 'दीगदत्थ' और 'दिसाला' नामक दो संतान हुए थे। कई वर्शों के बाद राजा विजय ने एक क्षत्रीय वंश की स्त्री से विवाह किया और 'कुवेणी' को छोड़ दिया। इस कारणवश कुवेणी के संतान रत्नपुर जिले के समन्तकूट क्षेत्र चले गये और अपनी परम्परा की वृद्धि की जिसे आगे चलकर 'वॅद्दा' नाम से विख्यात हुई।

सी.जी. सेलिगमन ने उनके आजीविका के अनुसार एक वर्गीकरण दिया गया है। उसमें निम्न प्रकार के प्रभेद देख सकते हैं।

1 गल वॅद्दा : वे हिंसाकारी एवं साहस है और गुफाओं में रहते हैं।
2 दड वॅद्दा : वे शिकार करते हैं और जंगल में घास पूस, बॉस, मिट्टी या पत्थरों से झोपड़ी बनाकर रहते हैं।
3 गॉव वॅद्दा : वे खती करते हैं और गॉव में रहते हैं।

सी. जी. सेलिगमन ने उनके निवासस्थान के अनुसार एक और वर्गीकरण निम्न प्रकार दिया गया है।

1 जंगल वॅद्दा

2 गाँव वॅद्दा या देहाती वॅद्दा

3 तट वॅद्दा, समुद्र वॅद्दा या मुहुदुवॅद्दा

इस आलेख में श्री लंका के सबसे प्रमुख दाबाँन आदिवासियों से सम्बंधित शोधाध्ययन है जो प्राथमिक एवं द्वितीय आँकड़ों के विश्लेषण से किया गया है ।

पहले दबाँन आदिवासियों का निवासस्थान स्थायी/स्थिर जगह पर नहीं था। वे देशभर भ्रमण करते रहते थे। शुरुआत में वे गुफाओं में रहते थे, पर बाद में जंगल में इकट्टा किये गये घास–पूस, बाँस, मिट्टी तथा पत्थरों से झोपड़ी बनाकर रहते थे। झोपड़ी में प्रवेश करने का एक ही दरवाज़ा है, जिसमें बाँस का किवाड़ होता है। दबान वॅद्दा पवित्रता पर ज्यादा ध्यान देते हैं। वे अपनी झोपड़ी में दो कमरों में से पीछे स्थित कमरा रसोईघर के रूप में प्रयोग करते हैं। उनकी घरेलू वस्तुओं में अनाज रखने की कोठी, बाँस की टोकरी, मिट्टी के बरतन, कपड़े, शिकार करने के धनुष एवं तीर पाया जाता है। पूर्वजों की संस्कृति के अनुसार रहनेवालों के साथ आज नयी पीढ़ी के लोग ईंट और कपरैल से बनाये गये घरों में रहते हैं।

उनका परिवार संयुक्त परिवार होता है और परिवार के सबसे वृद्ध पुरुष परिवार के मुखिया होते हैं। जब उनकी मृत्यु हो तब उनके बड़े पुत्र परिवार के मुखिया बन जाते हैं। वॅद्दा जाति में मातृत्व प्रधान परिवार होता है। परिवार में पति पत्नी दोनों को समान अधिकार होने के कारण दोनों को समानात्मता की भावना होती है। महिलाएँ अपने बाल बच्चों की देखभाल करते हुए घरेलू काम करती हैं। साँस–बहू, प्रेमी–प्रेमिका, भाई–बहन, माँ–बेटे, पति–पत्नी, ननद–भावज और देवर–भौजाई के मधुर संबंधों का आकर्शक रूप दिखाई देता है। पर औद्योगीकरण व नागरीकरण के कारण आजकल उनसे सामूहिक्ता की भावना छिन्न–भिन्न हो रही है।

दाबाँन आदिवासियों के द्वारा अपनी आजीविका के लिए मुख्य रूप से कृषि के साथ मछली पकड़ना एवं शिकार भी किया जाता है। कृषि के अंतरगत चावल, आलू, सब्जियाँ आदि पैदा की जाती है पर वे अपना अधिकांश भोजन शिकार करके एकत्र करते हैं। शिकारी के लिए वे धनुष और तीर काप्रयोग करते हैं। यदि पुरुष लोग भोजन के लिए सुअर, हिरण, खरगोश, बंदर और पक्षियों का शिकार करते हैं और उनका पसंदीदा भोजन हिरणों का माँस है, पर युवा या गर्भवती महिलाएँ जानवरों को नुकसान नहीं पहुँचाती। शिकारी के अलावा वे देशी औषधीय पौधों और मधुमक्खियों का शहद भी इकट्टा करते हैं। इसी तरह आज अपनी संस्कृति के अधीन रहने वाले आदिवासियों के साथ सरकार द्वारा दिये गये कानूनों से अपने वन क्षेत्र का एकाधिकार को समाप्त होने तथा उन्हें जीवन यापन के लिए बहुत कम भूमि उपलब्ध होने के कारण शहरों में रहकर व्यापार तथा श्रमिकों के रूप में विविध नौकरियाँ करनेवाले भी देख सकते हैं।

दबाँन वॅदि पुरुष पहले अपने कमर पर पट्टी बाँधकर उसमें पेड़ों के पत्ते टाँगकर निचले भाग के घुटनों तक ढाँकते थे। बाद में पत्तों के स्थान पर एक अयताकार कपड़े का टुकड़ा पहनते थे। परम्परागत रूप से पुरुष अपने शरीर के ऊपरी भाग पर वस्त्र नहीं पहनते। पर अपने कंघों पर कुल्हाड़ी और धनुष एवं तीर लटकाते हैं। आधुनिक युग में वे लुंगी (सरम्) पहनते हैं और कुल्हाड़ी

एवं धनुष के स्थान पर टेलिफोन (मॉबाइल), रेडियो, टेलिविज़न का इस्तेमाल करते हैं। प्राचीन काल की महिलाएँ कमर से घुटनों तक कपड़े का टुकटा पहनती थी, पर आजकल वे पूरे शरीर को ढाँकने के लिए जो कपड़े पहनती हैं, इन्हें छींट और चोली कहते हैं। पर नयी पीढ़ी के लोग सिंहल जाति के लोगों की तरह गाऊन, लँहगा, पतलून, कमीज़ एवं ब्लाऊज़ भी पहनते हैं।

उनके द्वारा भूत प्रेतों की पूजा और मृतकों की आत्माओं की पूजा के अलावा देवि–देवताओं की पूजा भी की जाती है। उनका विश्वास है कि मृतकों की आत्मा से जीवित रहने वालों को बीमारियाँ और विपत्तियाँ आ जाती है। इसलिए उनमें इन कष्टताओं से बचने की पूजा विधि होती है। अपने पूर्वजों की आत्माओं को प्रसन्न रखने के लिए 'किरि कॉरह' नामक पूजा की जाती है। जिस प्रकार आज इन पूजाओं के स्थान पर हिन्दू और बौद्ध धर्म भी अपनाया गया है उसी प्रकार सिंहली, तमिल एवं मुसल्मान जातियों की संस्कृतियों के प्रभाव के कारण उनकी रीति रिवाजों को भी काफी हदतक बदल गया है। अधिक्तर वॅदि महिलाओं ने अन्य जातियों से शादी की है इसलिए उन लोगों की परम्पराओं का बदलाव भी आ गया है।

सन् 1947 में दबाँन वॅदि विद्यालय खुला गया है। उसके बाद कई प्राथमिक और मध्यमिक विद्यालय खुले गये हैं। फलस्वरूप आज उनकी सिंहली भाषा की साक्षरता बढ़ रही है और उच्च शिक्षा प्राप्त किये गये लोग भी होते हैं। उनकी सरल वॅदि भाषा में सिंहली, तमिल और अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्द भी जुड़े हुए हैं। अन्य जातियों के सम्पर्क होने से उनकी सांस्कृतिक एकता भी उनसे छूट जाने की सम्भावना है।

इन सभी कारणों से कह सकते हैं कि दबाँन वॅदि आदिवासियों का दैनिक जीवन बदल गया है और वर्तमान में उन्हें अपने शांतिपूर्ण और सरल जीवन की रक्षा करते हुए अपनी संस्कृति एवं अपनी पहचान को सुरक्षित करने की कोशिश करनी पड़ती है।

संदर्भ

1 मीगस्कुबुँर, पी०बी०. (1995). सिरिलक वॅदि पुराणय. पिहनदिय प्रकाशनः कोट्टे।
2 नन्ददेव, विजेसेकर. (1964). वॅद्दन्गे विकाशन क्रमय. सांस्कृतिक आयोगः कॉलम्बू।
3 सोमसुन्दर, प्रो० दयानन्द. (2007). हेलदिववासीन सह आदिवासीन. एस गॉडगे प्रकाशन।
4 सेपाल, समरसेकर. (2001). लंकावे प्राथमिक जनताव. एस गॉडगे प्रकाशन।
5 रत्नपाल, डॉ० ई०एम०. (2006). लंकावे आदिवासीन. चतुर प्रकाशन।
6 रत्नपाल, ई०एम०. (1978). लंकावे वॅद्दो. आरिय प्रकाशनः वरकापॉल।
7 Selidman, C.G. (1911). The Veddas. Cambrige University Press: London.